<u>पाटन के सोलंकी कालीन रानी की वाव के मूर्तिशिल्प–एक कलात्मक अध्ययन</u>

डी.ई.आई.(डीम्ड यूनीवर्सिटी) दयालबाग़, आगरा से चित्रकला में

पी–एच.डी. की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

शोध निर्देशक :	शोध छात्रा :
प्रो. रागिनी रॉय	वर्षा बंसल
ड्राइंग एण्ड पेन्टिंग विभाग,	ड्राइंग एण्ड पेन्टिंग विभाग,
कला संकाय	कला संकाय
संकाय प्रमुख :–	विभागध्यक्ष :–
प्रो. जे.के. वर्मा	प्रो. रागिनी रॉय
अध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग,	ड्राइंग एण्ड पेन्टिंग विभाग,
कला संकाय	कला संकाय

2017

पाटन के सोलंकी कालीन रानी की वाव के मूर्तिशिल्प—एक कलात्मक अध्ययन

विषय—प्रवेश

शोध संकल्पना

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

परिकल्पना

उद्देश्य

चर

कार्य प्रणाली —

1— अनुसंधान अभिकल्प

2— प्रदत्त संकलन

अ— प्राथमिक स्त्रोत

ब— द्वितीयक स्त्रोत

3— प्रतिदर्श आकार

4— प्रदत्तों के एकत्रीकरण की प्रविधि

5— सीमायें

पाटन के सोलंकी कालीन रानी की वाव के मूर्तिशिल्प–एक कलात्मक अध्ययन

शोध संकल्पना

भारतीय कला भारतवर्ष के विचार, धर्म, दर्शन एवं तत्वज्ञान का दर्पण है, जिसको कि हमारे मूर्तिकारों ने मूर्त रूप में परिलक्षित किया। मध्य युग में देश में अनेक सुन्दर इमारतों का निर्माण हुआ। साथ ही पश्चिमी भारत में सरोवर, कुएँ और बावड़ियाँ बनवायी गयीं।

मूल रूप से कुएँ 'गहरे गड्डे', 'चट्टान से उत्कीर्ण कुएँ' या फिर 'पानी के तालाब होते हैं' जिनमें पानी के लिए सीढ़ीयाँ बनी होती हैं जिनको कि क्षेत्रीय विभिन्नता के आधार पर भिन्न–भिन्न नामों से पुकारा जाता है जैसे राजस्थान में '**बावड़ी**', '**बाउली**', '**बाउरी**' गुजरात में '**वाव**', '**वाई**' तथा संस्कृत शिल्प शास्त्रों व प्राचीन लेखों में कुएँ को '**वापी**' या '**वापिका**' नाम से सम्बोधित किया जाता है।

पश्चिमी भारत एक गर्म तथा अर्ध–शुष्क जलवायु वाला प्रदेश है जिसके कारण से बारिश के पानी को एकत्रित करने हेतु ऐसी इमारतों को बनवाया गया जिसके फलस्वरूप इन वावों, बावड़ियों, कुओं की रचना हुई। 7वीं शताब्दी से प्रचलित भूमिगत वाव वास्तुकला का अनूठा रूप हैं जिनका विस्तार मुख्य रूप से गुजरात राज्य में देखने को मिलता है।

मेरे शोध का विषय गुजरात राज्य के पाटन जिले में स्थित रानी की वाव है जिसका नाम विश्व प्रसिद्ध है। इस वाव का निर्माण गुजरात के सोलंकी वंश (चौलुक्य) के राजा भीमदेव प्रथम की पत्नी रानी उदयमती ने सन् 1063 ई. में अपने पति की याद में करवाया था। पाटन सरस्वती नदी के किनारे बसा एक जिला है जिसको प्राचीन समय में अनेक नामों से जाना जाता था जैसे अनाहीलपुरा, अनाहिलवाड़ा, अनाहिलपाटका, अनालवता, नहारवल्ला आदि। यह एक समृद्धशाली शहर है जो कि गुजरात के सोलंकी (चौलुक्यों) की राजधानी भी है। गुजरात के इतिहास में सोलंकी राजवंश को 'स्वर्ण युग' माना जाता है। रानी की वाव का विवरण जैन पुरोहित 'मेरूतुंग' द्वारा कृत 'प्रबन्धचिन्तमणि' नामक ग्रंथ में मिलता है जिसका समयकाल सन् 1304 ई. था।

भूगर्भीय बदलावों के कारण सरस्वती नदी में बाढ़ के आने से यह बहुमूल्य धरोहर काफी सालों तक मिट्टी की परतों में दबी रही जिसको भारतीय पुरातत्व विभाग ने सन् 1960 ई. में खुदाई में

निकाला। खुदाई से पूर्व इस वाव में लगभग 800 मूर्तिशिल्प थे जिसमें से अब लगभग 500 मूर्तिशिल्प शेष हैं। दीवारों तथा खम्भों पर ज्यादातर नक्काशियाँ राम, वामन, महीसासुरमर्दिनी, कल्की जैसे अवतारों के रूप में भगवान विष्णु, नायिकायें, अप्सरायें, योग–योगिनी आदि को समर्पित हैं। यह वाव मरू–गुर्जर शैली में निर्मित है जिसमें 7 मंजिल हैं।

भारतीय वाव के इतिहास में अनेक गौरवशाली पन्ने हैं। उन्हीं में से एक सोलंकी काल में निर्मित रानी की वाव स्वर्णांकित है। विभिन्न आकार, प्रकार एवं कलात्मक गुणों से युक्त इस वाव के मूर्तिशिल्पों का अध्ययन अवश्य ही कला के नये आयाम स्थापित करेगा।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

शोध को आधार प्रदान करने हेतु साहित्य का पुनरावलोकन सबसे प्रमुख अंग माना जाता है जिससे शोधकर्ता अपने शोध से सम्बन्धित तथ्यों का पुनरावलोकन कर सके। इसी के आधार पर शोधकर्ता अपने शोध से सम्बन्धित तर्कों को प्रस्तुत करता है तथा साथ ही यह शोध के विषय और क्षेत्र से संदर्भित होता है। इसका मुख्य उद्देश्य है कि इसके द्वारा यह ज्ञात होता है कि अनुसंधानकर्ता को अपने विषय से सम्बन्धित प्रकाशित साहित्य का कितना ज्ञान है।

मैंने अपने शोध को तर्कपूर्ण तथा महत्वपूर्ण बनाने के लिए कुछ साहित्यों का अध्ययन किया जैसे 'श्रीमती अस्मिता' द्वारा प्रकाशित *'Millenium History of Patan'* जिसके अंतर्गत मैंने पाटन शहर की ऐतिहासिक स्थिति का ज्ञान प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त मैंने 'Miki Desai/Madhavi Desai' की *'Architectural Heritage of Gujarat'* से रानी की वाव के स्थापत्य को जाना। साथ ही मैंने *'Gujarat: glimpses of glory'*, *'Rani-ki-Vav (Patan)'*, *'भारतीय मूर्तिशिल्प एवं स्थापत्य कला*, 'Therapeutics in Indian Sculptures', *'पाटन की प्रसिद्ध रानी की वाव (गुजराती)'* आदि पुस्तकों का अध्ययन किया।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन की मुख्य विशेषता यह भी होती है कि हम इसके अंतर्गत प्रचलित साहित्यों का अध्ययन तो करते ही हैं साथ ही उन साहित्यों का विश्लेषण भी करते हैं। मैंने अपने शोध को तर्कपूर्ण बनाने हेतु अनेकों साहित्यों का अध्ययन किया जिनमें पाटन शहर की ऐतिहासिक स्थिति, रानी की वाव के स्थापत्य, सोलंकी राजवंश आदि का ज्ञान प्राप्त हुआ परन्तु मैं

अपने शोध में रानी की वाव के मूर्तिशिल्पों का कलात्मक अध्ययन तो प्रस्तुत करूँगी साथ ही आधुनिक युग में उसकी प्रासंगिकता के महत्व को भी प्रस्तुत करूँगी जो कि मेरे शोध की मौलिक विशेषता होगी।

सम्बन्धित शोध विषय को सारगर्भित बनाने हेतु मैं प्रयास करूँगी कि प्राथमिक स्त्रोतों का प्रयोग करूँ। इसके माध्यम से मुझे शोधकार्य की रूपरेखा तैयार करने में सहायता मिलेगी।

परिकल्पना

एक शोधकर्ता के लिए सर्वप्रथम यह आवश्यक है कि उसके शोध की परिकल्पना एकदम स्पष्ट व अर्थपूर्ण हो। शोध प्रारम्भ करने से पूर्व शोध परिकल्पना को तैयार करना अति आवश्यक होता है। यह वाव भूमिगत संरचना है जिसमें 7 मंजिल हैं। इस वाव की विशिष्ट रचना ने मुझे इसे अपना शोध विषय बनाने के लिए प्रेरित किया तथा इसको और अधिक जानने हेतु मैंने इसे अपने शोध विषय हेतु चयनित किया।

शोध विषय चयन करते समय मैंने देखा कि अब तक जो भी शोधकार्य हुए वे लघुचित्रों, मंदिरों, स्थापत्यों, कला शैलियों व कलाकार आदि पर हुए परन्तु वाव जैसे अनोखे स्मारक पर अब तक कार्य नहीं हुआ तथा कुछ नया करने की इच्छा से मैंने इसे अपने शोध विषय के लिए चुना। इस वाव का भ्रमण करने के पश्चात् मेरी इसको शोध विषय बनाने की इच्छा हुई जिससे मैं इसके विषय में अपने शोध द्वारा कला विद्यार्थियों तथा भावी पीढ़ी को लाभान्वित कर सकूँ।

उद्देश्य

मेरे इस लघु शोध को पूर्ण करने हेतु निम्न उद्देश्यों का पालन किया जायेगा :–

- पाटन शहर के ऐतिहासिक, भौगोलिक व सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को प्रस्तुत किया जायेगा।
- वाव के स्थापत्य पर प्रकाश डाला जायेगा।
- वाव के मूर्तिशिल्पों के कलात्मक पक्ष को भी बताना मेरा उद्देश्य होगा।
- सोलंकी कालीन रानी की वाव के मूर्तिशिल्प के भारतीय कला में योगदान को भी बताना मेरा प्रमुख उद्देश्य होगा।

चर

मेरे शोध प्रबन्ध के चरों के आधार पर सूत्र निम्नलिखित हैं–

1. विषय–विशेषज्ञों से विषय पर वार्तालाप।
2. संग्रहालय व पुस्तकालय के अधिकारी।
3. पुस्तकें।
4. विवरणिका (कैटलॉग)।
5. इन्टरनेट वेबसाइट्स।

कार्य प्रणाली

1. अनुसंधान अभिकल्प– इस शोध कार्य का अध्ययन मूर्तिकला से सम्बन्धित कलात्मक एवं वर्णात्मक अनुसंधान होगा।

2. प्रदत्त संकलन– प्रदत्तों के एकत्रीकरण प्राथमिक व द्वितीयक स्त्रोतों पर आधारित रहेंगे।

- **प्राथमिक स्त्रोत** :– शोध विषय से सम्बन्धित स्थान का भ्रमण तथा पाटन के स्थानीय लोगों से वार्तालाप तथा पाटन स्थित पाटन म्यूजियम व सरकारी पुस्तकालय का भ्रमण, भारतीय पुरातत्व विभाग का भ्रमण। साथ ही दिल्ली स्थित विभिन्न पुस्तकालयों का भ्रमण।
- **द्वितीयक स्त्रोत** :– पुस्तकें, वेबसाइट, समाचार–पत्र, लेख आदि।

  – मेरे निर्देशक के साथ विषय पर वार्तालाप।

प्रतिदर्श आकार

मेरे द्वारा पाटन स्थित रानी की वाव मूर्तिशिल्पों से प्रतिदर्शों की स्थिति अनुसार प्रतिदर्शों का चयन कर लिया जायेगा।

साक्षात्कार

विषय–विशेषज्ञों व स्थानीय लोगों से साक्षात्कार।

प्रदत्त संकलन की प्रक्रिया

मेरे प्रदत्त संकलन की प्रक्रिया चर्चाओं, मूर्तिशिल्पाकृतियों व विवेचनाओं पर आधारित होगी।

सीमा

एक शोधकर्ता के लिए सर्वप्रथम यह आवश्यक है कि वह अपने शोध के कार्य को अपनी समय–सीमा को देखते हुए पूर्ण करने का प्रयास करे। इसी क्रम में मैंने गुजरात राज्य के पाटन जिले में स्थित रानी की वाव का चयन किया तथा उसे अपने शोध का विषय बनाया। शोध से सम्बन्धित तथ्यों के आधार पर शोध को अपनी समय–सीमा पर पूर्ण करने का प्रयास करूँगी।

पाटन के सोलंकी कालीन रानी की वाव के मूर्तिशिल्प – एक कलात्मक अध्ययन

विषय अनुक्रमणिका

भूमिका :– भारतीय वावों का संक्षिप्त परिचय।

प्रथम अध्याय :– गुजरात में पाटन के सोलंकी काल की भौगोलिक, ऐतिहासिक व सांस्कृतिक परम्परा का अध्ययन।

1.1 भौगोलिक स्थिति।

1.2 ऐतिहासिक स्थिति।

1.3 धार्मिक व सांस्कृतिक परिवेश।

द्वितीय अध्याय :– रानी की वाव का परिचय एवं महत्व।

2.1 वाव के स्थापत्य के साथ मूर्तिशिल्पों की विषय–वस्तु।

तृतीय अध्याय :– वाव के मूर्तिशिल्पों का कलात्मक अध्ययन।

3.1 तालमान

3.2 वर्ण

3.3 हस्त मुद्रायें

3.4 पाद मुद्रा और आसन

3.5 शरीर मुद्रा

3.6 वाहन

3.7 अलंकार (षोडशाभरण)

3.8 आयुध

3.9 परिकर

चतुर्थ अध्याय :– सोलंकी काल में निर्मित वावों का तुलनात्मक अध्ययन।

उपसंहार :– आधुनिक युग में प्रासंगिकता।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

- हिन्दी
- अंग्रेजी
- शोध पत्र–पत्रिकायें
- समाचार पत्र
- वेबसाइट्स
- चित्र सूची

परिशिष्ट :–

- विभिन्न कला समीक्षकों के विचार
- तकनीकी शब्दों का अर्थ
- समाचार पत्र

अनुसंधान अभिकल्प

भूमिका :– कला का क्षेत्र अत्यंत व्यापक व विस्तृत है। भारत के अधिकांश निवासी मूर्तिपूजक हैं। मध्य युग में जब विदेशी और मुस्लिम आक्रांताओं के आक्रमण प्रारम्भ हुए तब देश में ललित कलायें कुछसमय के लिए प्रभावित हुईं परन्तु भारत एक धर्म सहिष्णु देश रहा है जिसमें समन्वय की क्षमता इस सीमा तक देखी जा सकती है कि शक, हूण, यवन, कुषाण और मुगल आदि विदेशी ताकतें भी भारतीय संस्कृति की मूलधारा में समाहित होकर उसका अंग बन गये। देश में इस काल में अनेक सुन्दर इमारतों का निर्माण हुआ। इन इमारतों के अतिरिक्त गुजरात, राजस्थान आदि प्रदेशों में सरोवर, कुएँ और वाव बनवाये गए। इसके अंतर्गत वाव के शाब्दिक अर्थ को बताते हुए उसके संक्षिप्त परिचय को प्रस्तुत किया जायेगा। साथ ही भारतीय वावों के उद्भव एवं विकास को भी बताया जायेगा जिसके अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों में पाये गये वावों का भी अध्ययन प्रस्तुत किया जायेगा। इसके अतिरिक्त वाव तथा तालाब के तुलनात्मक अध्ययन पर भी प्रकाश डाला जायेगा।

प्रथम अध्याय :– इसमें गुजरात में पाटन की भौगोलिक स्थिति का वर्णन दिया जायेगा। पाटन पश्चिम भारत के गुजरात राज्य में स्थित 33 जिलों में से एक जिला है। साथ ही गुजरात के सोलंकी राजवंश की ऐतिहासिक, धार्मिक व सांस्कृतिक स्थिति को भी बताया जायेगा। राजनीतिक दृष्टि से गुजरात की ऐतिहासिक समृद्धि को देखा जाये तो यह चौलुक्य राजवंश से शुरू होता है।

इसका विवरण हमें जैन लेखकों के ग्रंथों से प्राप्त होता है। यह लेखक चौलुक्यों शासक की राज्य सभा में कार्य करते थे।

<u>द्वितीय अध्याय</u> :– द्वितीय अध्याय में रानी की वाव के परिचय एवं महत्व के साथ वाव के स्थापत्य पर प्रकाश डाला जायेगा जिसके अंतर्गत वाव के स्थापत्य की विशेषताओं को बताते हुए मूर्तिशिल्पों की विषय–वस्तु (विष्णु दसावतार, अप्सरायें, नायिकायें, साधु, विषकन्या, ज्यामितीय अलंकरण) आदि का वर्णन किया जायेगा। यह वाव मरू–गुर्जर शैली में निर्मित है।

<u>तृतीय अध्याय</u> :– इसके अंतर्गत मैं रानी की वाव के मूर्तिशिल्पों का कलात्मक अध्ययन प्रस्तुत करूँगी। यह कलात्मक अध्ययन मूर्तिकला के प्रमुख तत्वों जैसे तालमान, हस्त मुद्रायें, पाद मुद्रा और आसन, शरीर मुद्रा, वाहन, अलंकार आदि पर आधारित होगा।

<u>चतुर्थ अध्याय</u> :– इस अध्याय में सोलंकी काल अर्थात् 11वीं शती ई. से 13वीं शती ई. के मध्य निर्मित वावों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जायेगा। जिसमें रानी की वाव की तुलना सोलंकी काल में निर्मित अन्य वावों जैसे माता–भवानी वाव (असारवा), मीनाल–नी वाव (उमरेठ), ज्ञान वाव (विसवाड़ा) आदि से की जायेगी।

<u>उपसंहार</u> :– इसमे मैं आधुनिक युग में वाव जैसे स्मारक की महत्वता को प्रस्तुत करूँगी। इसके अतिरिक्त वाव में उत्कीर्ण ज्यामितीय अलंकरणों के स्वरूप की आधुनिकता को भी प्रस्तुत करूँगी।

दिनांक :– **वर्षा बंसल**

(शोधार्थी)

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

- उपाध्याय, वासुदेव शरण –1982, भारतीय मूर्ति विज्ञान, चौखम्भा सुर भारती प्रकाशन, वाराणसी।
- माधव, श्री विलास डी –2012, पाटन की प्रसिद्ध रानी की वाव (गुजराती), वैभव प्रकाशन, वडोडरा।
- सिंह, श्री नाथ –1992, गुजरात के चौलुक्यों का राजनीतिक इतिहास, कनिष्का पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली।
- सोमपुरा, प्रभाषंकर ओ. –1975, भारतीय शिल्प संहिता, सौमेया पब्लिकेशन्स, प्रा. लि., बम्बई।
- श्रीवास्तव, के.सी. –1991, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, युनाईटेड बुक डिपो।
- श्रीवास्तव, बृजभूषण –1990, प्राचीन भारतीय प्रतिमा विज्ञान एवं मूर्तिकला, वाराणसी।

Bibliography :-

- Burgess, J & Henry C. - 1903, The Architectural Antiquities of Northern Gujarat,More Especially of the Districts Inccluded in the Baroda State, Archaeological Survey of India, New Imperial Series, Western India, London Bernard.
- Desai, Miki & Desai, Madhavi - 2011, Architectural Heritage of Gujarat, Commissionerate of Information, Gandhinagar.
- Jain-Neubauer,J - 1981, Stepwells of Gujarat in art- Historical Perspective, Abhinav Publications, New Delhi.

- Kumar, R & Ram, S - 2008, Hindu Art, Architecture and Culture, Crescent Publishing Corporation, New Delhi.
- Mankodi,Kirti - 2012, Rani-ki-Vav,Patan, Published by The Archaeological Survey of India, New Delhi.
- Mittra, Vipul & Kaul, Sanjay - 2014, Heritage Gems of Gujarat, Tourism Corporation of Gujarat Limited, Gujarat.
- Morna,L - 2002, Steps to water-The Ancient Stepwells of India, Princeton Architectural Press.
- Philip, Davies - 1989, The Penguin Guide to the Monument of India, Volume II : Islamic, Rajput, European, Penguin Group, England.
- Shekhavat, Abhilash - 2012, Stepwells of Gujarat: India's Invitation Retrieved.
- Tod, James - 1971, Travels in Western India, Oriental Publishers, Delhi.

Websites :-

- www.gujaratholiday.com
- www.pinterest.com
- www.gujarattourism.net
- www.ahemdabadcity.com
- www.britannica.com
- www.mythicalindia.com
- www.engineshed.org
- www.indiatales.com
- www.walkthroughindia.com

- www.gounesco.com
- www.chitrolekha.com/\/5/n2/04_stepwells_in_india
- www.kamit.jp/02-unesco/22/-patan/xbarot-2eng.htm
- www.gujaratsamachar.com
- www.holidify.com
- www.visual-arts-cork.com

<u>समाचार पत्र :–</u>

- जून, 15, 2014, दिव्य भास्कर।
- June, 17, 2014, Times of India.
- June, 18, 2014, DNA.
- June, 20, 2014, Ahmedabad Mirror.
- June, 20, 2014, Akila.
- जून, 20, 2014, दिव्य भास्कर।
- जून, 20, 2014, गुजरात समाचार।
- June, 20, 2014, Indian Express

चित्र सं.–1– रानी की वाव का प्रवेश द्वार, 11वीं शती ई., बलुआ पत्थर

चित्र सं.–2– रानी की वाव के सामने का दृश्य, 11वीं शती ई., बलुआ पत्थर

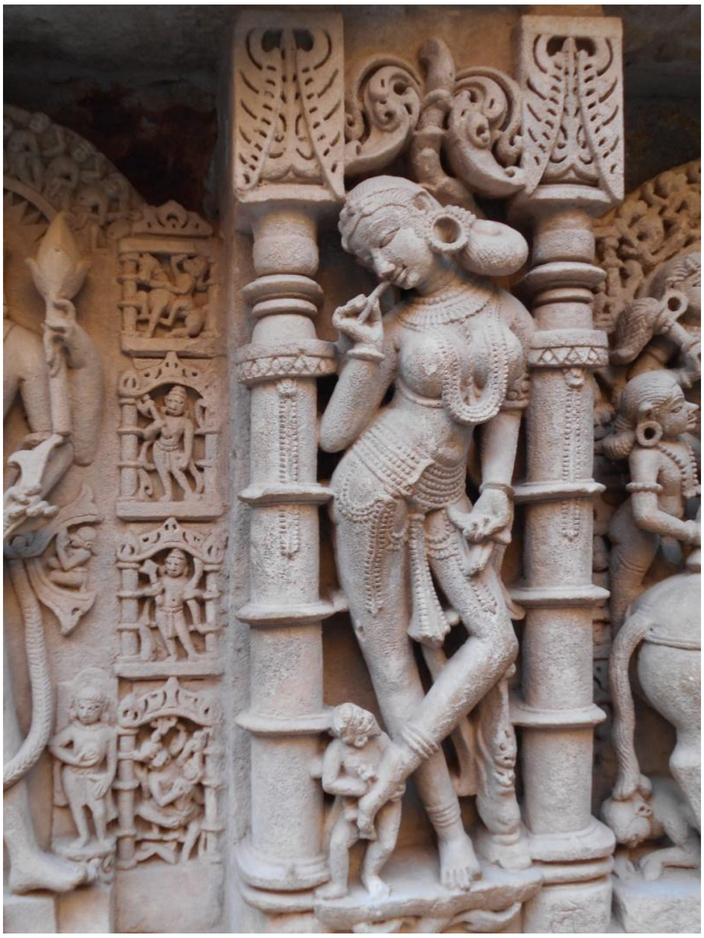

चित्र सं.–3– श्रृंगार करती अप्सरा, बलुआ पत्थर, 11वीं शती ई., रानी की वाव, पाटन

चित्र सं.–4– खम्भे पर उत्कीर्ण आकृति कीचक, बलुआ पत्थर

चित्र सं.–5– वराह अवतार, बलुआ पत्थर,11वीं शती ई.

चित्र सं.–6– पट्टिकाओं पर पशु अंकन